आज
कानपुर
13 जून 2021 4

भूगर्भ जलस्तर में गिरावट जारी, छोटे जलाशय बना रोकें वर्षा जल

जल संचयन के लिए जांच करते टीम के सदस्य।

कानपुर, 12 जून। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ डी.आर. सिंह की ओर से वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ वीके कनौजिया ने जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन विषय पर संयुक्त रूप में विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि जल ही जीवन है, जल जीवन का अमृत है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है। आज समय की मांग है कि हम सभी को वर्तमान व भावी पीढियों के लिए जल संरक्षण व उसके उचित प्रबंधन पर तेजी से काम करना होगा।

डॉ कनौजिया ने बताया कि भारत में 85 प्रतिशत पानी कृषि कार्य, 10 प्रतिशत उद्योगों और 5 प्रतिशत घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि देश में पानी की मांग 2030 तक दोगुना होने की संभावना है। आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घन मीटर थी जो वर्ष 2000 में 2300 घन मीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घन मीटर रह जाने का अनुमान है।

उन्होंने कहा देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 प्रतिशत जल संचयन कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों, कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। डॉ कनौजिया ने कहा वर्षा जल के संचयन यह सबसे उपयुक्त समय है। इस मौसम में लगभग 75 दिन ही वर्षा होती है जिसमें लगभग 85 से 90 प्रतिशत भाग बरस जाता है तथा वर्ष के शेष महीनों में छुटपुट वर्षा से काम चलाना पड़ता है । वर्षा के दौरान आवश्यकता से अधिक जल की उपलब्धता का संचयन हमारे उज्जवल भविष्य की आवश्यकता है। तालाबों, नदियों, झरनों, बांधों, आदि में जल का का इकट्ठा होना हमारी जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा है। इन सबके बावजूद वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे घरों, खेतों, जंगलों, आदि से बहकर ऐसे दूरस्थ स्थानों पर चला जाता है जो हमारे उपयोग में नहीं आता तथा भूजल के स्तर को भी बढ़ाने में मदद नहीं करता। इस बहने वाले जल को रोकना अति आवश्यक है। सामूहिक रूप से जल के संरक्षण के उपायों को अपनाया जाना चाहिए । हमें अपने खेतों, तालाबों, जलांशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व इकट्ठा करने के अलावा बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे - छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा को करना चाहिए जो धीरे-धीरे रिस कर भूजल में पहुंच जाएगा। मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने सलाह दी है कि खेतों को ऊंचा तथा ढालू खेतों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह-जगह रोक देना चाहिए। यह सबसे सरल तथा प्रभावी उपाय है। इससे मात्र जल का संरक्षण ही नहीं होता बल्कि मृदा क्षरण को भी रुकता है परिणाम स्वरूप फसलों की उपज बढ़ती है। डॉ खलील खान ने बताया कि जल संकट को आने से रोकने के लिए घर- घर में छोटे जलाशय बना कर छतों का पानी इकठ्ठा करें।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress https://worldkhabarexpress.media/

WORLD खबर EXPRESS

WORLD खबर एक्सप्रेस

अंक : 257 कानपुर नगर

'हसीन दिलरुबा' बन तापसी मचा रही धमाल

पेज 10

12 जून 2021, शनिवार

www.worldkhabarexpress.media MID DAY E-PAPER www.worldkhabarexpress.com

सीएसए के वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया, डॉ. खलील खान ने दी जानकारी

'वर्षा जल संचयन, उसका उचित प्रबंधन बहुत जरूरी'

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने वर्षा जल संचयन और उसके उचित प्रबंधन पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जल ही जीवन है, जल जीवन का अमृत है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है। आज समय की मांग है कि हम सभी को वर्तमान व भावी पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण व उसके उचित प्रबंधन पर तेजी से काम करना होगा। जल संचयन के लिए समय रहते जाग जाएं क्योंकि 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून, पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून'।

उन्होंने कहा कि देश में 85 फीसदी पानी कृषि कार्य, 10 फीसदी उद्योगों और 5 फीसदी घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि देश में पानी की मांग 2030 तक दोगुना होने की संभावना है। आंकड़ों के अनुसार, देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घन मीटर थी जो वर्ष 2000 में 2300 घन मीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घन मीटर रह जाने का अनुमान है। देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 फीसदी जल संचयन कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों, कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। वर्षा जल के संचयन का यह सबसे उपयुक्त समय है। इस मौसम में लगभग 75 दिन ही वर्षा होती है जिसमें लगभग 85 से 90 फीसदी भाग बरस जाता है और साल के शेष महीनों में छुटपुट बारिश से काम चलाना पड़ता है। वर्षा के दौरान आवश्यकता से अधिक जल की उपलब्धता का संचयन हमारे उज्जवल भविष्य की आवश्यकता है। देखा जाए तो फसलों, वनस्पतियों तथा मत्स्य पालन को छोड़कर, वर्षा जल का सीधा उपयोग कम ही जगह पर होता है लेकिन तालाबों, नदियों, झरनों, बांधों, आदि में जल का का एकत्र होना हमारी जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा है। इन सबके बावजूद वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे घरों, खेतों, जंगलों आदि से बहकर ऐसे दूरस्थ स्थानों पर चला जाता है जो हमारे उपयोग में नहीं आता तथा भूजल के स्तर को भी बढ़ाने में मदद नहीं करता। इस बहने वाले जल को रोकना अति आवश्यक है। वर्षा जल जहां गिरे, वहीं सञ्चित कर लिया जाना एक आदर्श स्थिति है। सामूहिक रूप से जल के संरक्षण के उपायों को अपनाया जाना चाहिए क्योंकि हम सब स्वतंत्र रूप से भूजल का दोहन बिना कोई शुल्क अदा किए कर रहे हैं। हमें अपने खेतों, तालाबों, जलाशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व एकत्र करने के अलावा बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे - छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा करना चाहिए जो धीरे-धीरे रिस कर भूजल में पहुंच जाएगा। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने सलाह दी है कि खेतों की मेड़ों को ऊंचा व ढालू खेतों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह-जगह रोक देना चाहिए। यह सबसे सरल तथा प्रभावी उपाय है। इससे मात्र जल का संरक्षण ही नहीं होता बल्कि मृदा क्षरण को भी रुकता है जिससे फसलों की उपज बढ़ती है। इसलिए जल का संरक्षण एकमात्र हमारी जलापूर्ति तथा फसल उत्पादन का उपाय है। जल संकट को आने से रोकने के लिए घर- घर में छोटे जलाशय बना कर छतों का पानी इकट्ठा करें। खेतों की मेड़ों को मजबूत और ऊंचा करें। फसलों को मेड़ों पर बोएं। अधिक से अधिक दलहनी फसलें उगाएं। बृहद स्तर पर वृक्षारोपण करें। जलाशयों व तालाबों को गहरा किया जाना चाहिए और नालों को जगह-जगह बांध कर जल रोकें जिसे बाद में उपयोग लिया जा सकें। कम पानी चाहने वाली फसलें उगाएं तथा जमीन से निकाले गए जल का सदुपयोग किया जाना अति आवश्यक है जिससे आने वाले समय में पानी के लिए भटकना न पड़े। उन्होंने कहा कि इस तरह से भविष्य के लिए हम पानी सहेज कर रख सकते हैं।

अमर उजाला
रविवार • 13.06.2021
05
kanpur.amarujala.com

बारिश के जल संचयन पर दिया जोर

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. वीके कनौजिया और मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने शनिवार को 'जरूरी है वर्षा जल संचयन और उचित प्रबंधन विषय' पर एडवाइजरी जारी की है। डॉ. कनौजिया ने बताया कि कुल बारिश का पांच प्रतिशत जल संचित कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों, कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे-छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा करना चाहिए जो धीरे-धीरे रिसकर भूजल में पहुंच जाएगा। डॉ. खलील ने बताया कि खेतों की मेंड़ों को ऊंचा और ढालदार खेतों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह-जगह रोक देना चाहिए। (संवाद)

वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन है जरूरी

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.वीके कनौजिया एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने वर्षा जल संचयन को आवश्यक बताते हुए कहा है कि वर्ष जल का संचयन व उसका उचित प्रबंधन जरूरी है। जल ही जीवन है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है। वैज्ञानिक द्वय ने कहा कि हम सभी को वर्तमान व भावी पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण व उसके उचित प्रबंधन पर तेजी से काम करना होगा। उन्होंने बताया कि देश में पानी की मांग 2030 तक दोगुना होने की संभावना है। लेकिन इसके विपरीत पानी की उपलब्धता घट रही है।

सीएसए के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.वीके कनौजिया व मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने वर्षा जल संचयन को लेकर दी सलाह

देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घनमीटर थी, वर्ष 2025 तक इसके घटकर 1600 घनमीटर ही रह जाने का अनुमान

डॉ.कनौजिया ने बताया कि भारत में 85 प्रतिशत पानी कृषि कार्य में, 10 प्रतिशत उद्योगों में व 5 प्रतिशत घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घनमीटर थी, जो वर्ष 2000 में 2300 घनमीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घनमीटर रह जाने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 प्रतिशत जल संचयन कर लिया जाय तो देश के करोड़ों लोगों, कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है।

वर्षा जल संचयन के बारे में किसानों को जानकारी देते कृषि वैज्ञानिक।

डॉ. वीके कनौजिया।

डॉ खलील खान

उन्होंने बताया कि वर्षा जल संचयन का यह सबसे उपयुक्त समय है। इस मौसम में लगभग 75 दिन वर्षा होती है, जिसमें लगभग 85 से 90 प्रतिशत भाग बरस जाता है तथा वर्ष के शेष महीनों में छिटपुट वर्षा से काम चलाना पड़ता है। वर्षा के दौरान आवश्यकता से अधिक जल की उपलब्धता का संचयन हमारे उज्जवल भविष्य की आवश्यकता है। डॉ.कनौजिया के मुताबिक फसलों, वनस्पतियों तथा मत्स्य पालन को छोड़कर वर्षा जल का सीधा उपयोग कम ही जगह पर होता है। परंतु तालाबों, नदियों, झरनों,बांधों आदि में जल का इकट्ठा होना हमारी जरूरतों के एक बड़े हिस्से की पूर्ति करता है। इन सबके बावजूद वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे घरों, खेतों, जंगलों आदि से बहकर ऐसे दूरस्थ स्थानों पर चला जाता है, जो हमारे उपयोग में नहीं आता तथा भूजल स्तर को भी बढ़ाने में मदद नहीं करता। इस बहने वाले जल को रोकना अति आवश्यक है। वर्षा जल जहां गिरे वहीं संचित कर लिया जाना एक आदर्श स्थिति है। सामूहिक रूप से जल संरक्षण के उपायों को अपनाना चाहिए, क्योंकि हम सब स्वतंत्र रूप से भूजल को दोहन बिना कोई शुल्क अदा किये कर रहे हैं। हमें अपने खेतों, तालाबों, जलाशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व इकट्ठा करने के अलावा बड़े घरों व प्रतिष्ठानों में छोटे-छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल का इकट्ठा करना चाहिए, जो धीरे-धीरे रिसकर भूजल में पहुंच जायेगा।

मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने सलाह दी है कि खेतों की मेड़ों को ऊंचा कर, ढालू खेतों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह-जगह रोक देना चाहिए। यह सबसे सरल व प्रभावी उपाय है। इससे मात्र जल का संरक्षण ही नहीं होता बल्कि मृदा क्षरण को भी यह रोकता है। परिणामस्वरूप फसलों की उपज बढ़ती है। उन्होंने जल संकट को आने रोकने के लिए घर-घर में छोटे जलाशय बनाकर छतों का पानी इकट्ठा करने संचय किये जाने पर भी जोर दिया है।

R.N.I. NO UPHIN@ 2013/53179

कानपुर नगर कानपुर देहात उन्नाव हमीरपुर कन्नौज इटावा अरई जालौन लखनऊ आगरा मथुरा औरैया इलाहाबाद से एक साथ प्रसारित

वर्ष - 8
अंक - 207
कानपुर
रविवार 1 3
जून 2021
पृष्ठ - 4
मूल्य 1:00

2 गज की दूरी, मास्क है जरूरी

सोशल रिपोर्टर

हिन्दी दैनिक

बेल एक लाभ अनेक- डॉ रामप्रकाश

सत्य प्रकाश

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा जारी वैज्ञानिकों को निर्देश के क्रम में आज वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ रामप्रकाश ने बेल एक लाभ अनेक विषय पर जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि बेल कई रोगों की रोकथाम करता है जैसे कफ, बात विकार, बदहजमी, दस्त, मूत्र रोग, पेचिश, डायबिटीज, ल्यूकोरिया इसके अतिरिक्त पेट दर्द, हृदय विकार, पीलिया, बुखार, आंखों के रोग आदि में बेल के सेवन से लाभ मिलता है। उन्होंने बताया कि बेल एक प्रचुर मात्रा में औषधीय गुणों से भरपूर फल है। आयुर्वेद में औषधीय दृष्टि से बेल के प्रत्येक भाग, बीज, तना, पत्ती और ज?ों का महत्व है । कच्चे फलों को सुखाकर बनाया गया चूर्ण अजीर्ण और आमाविसार को रोकता है ।इसके सेवन से पेट साफ रहता है । तने की छाल का रस ज्वरनाशक होता है। पका फल खाने में स्वादिष्ट होता है ।फल के गूदे से शर्बत तैयार किया जाता है जो गर्मियों में लाभदायक होता है । कच्चे फल का मुरब्बा बनाया जाता है जो बहुत स्वादिष्ट होता है। बेल में प्रोटीन, बीटा कैरोटीन, थायमीन, रिबोफ्लैविन और विटामिना सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है ।

बेल के फल का जीवनकाल काफी लम्बा होता है। पे? से टूटने के कई दिन बाद भी इसका इस्तेमाल किया जा सकता है । बेल का रस कोलेस्ट्राल के स्तर को नियन्त्रित रखने में मददगार होता है । बेल के रस को शहद के साथ मिलाकर पीने से एसीडिटी मे राहत मिलती है । बेल के रस में कुछ मात्रा गुनगुने पानी की मिला लें और इसमें थोडी सी शहद डालें, इस पेय के नियमित सेवन से खून साफ हो जाता है । बेल का रस तैयार करके उसमें कुछ बूंदें घी की मिला दीजिए, इस पेय को हर रोज निश्चित मात्रा में लें। इसके नियमित सेवन से दिल से जु?ी बीमारियों से बचाव होता है । यह ब्लड शुगर को नियन्त्रित करने में सहायक होता है । उन्होंने बताया की कोरोना की वैज्ञानिकों द्वारा तीसरी लहर की आशंका जताई जा रही है ऐसे में बेल का प्रयोग कर शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जा सकती है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

RNI-NO-UTTBIL/2007/20700

वर्ष:12 | अंक:165 | देहरादून, शनिवार, 12 जून, 2021 | पृष्ठ:08 | मूल्य:2/रु. प्रति

3 मौसम का रेड अलर्ट, तड़के देहरादून में चली तेज आंधी

जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन: डॉ. वीके कनौजिया

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ वीके कनौजिया एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन विषय पर संयुक्त रूप में विस्तार से जानकारी दी है उन्होंने बताया कि जल ही जीवन है, जल जीवन का अमृत है इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है आज समय की मांग है कि हम सभी को वर्तमान व भावी पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण व उसके उचित प्रबंधन पर तेजी से काम करना होगा जल संचयन के लिए समय रहते जाग जाएं क्योंकि रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून डॉ० कनौजिया ने बताया कि भारत में 85% पानी कृषि कार्य, 10% उद्योगों और 5% घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है उन्होंने बताया कि देश में पानी की मांग 2030 तक दोगुना होने की संभावना है उन्होंने यह भी बताया कि आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घन मीटर थी जो वर्ष 2000 में 2300 घन मीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घन मीटर रह जाने का अनुमान है उन्होंने कहा देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 प्रतिशत जल संचयन कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है डॉ० वीके कनौजिया ने कहा वर्षा जल के संचयन यह सबसे उपयुक्त समय है इस मौसम में लगभग 75 दिन ही वर्षा होती है जिसमें लगभग 85 से 90% भाग बरस जाता है तथा वर्ष के शेष महीनों में छुटपुट वर्षा से काम चलाना पड़ता है वर्षा के दौरान आवश्यकता से अधिक जल की

उपलब्धता का संचयन हमारे उज्जवल भविष्य की आवश्यकता है देखा जाये तो फसलों, वनस्पतियों तथा मत्स्य पालन को छोड़कर, वर्षा जल का सीधा उपयोग कम ही जगह पर होता है परंतु तालाबों, नदियों, झरनों, बांधों, आदि में जल का का इकट्ठा होना हमारी जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा है इन सबके बावजूद वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे घरों, खेतों, जंगलों, आदि से बहकर ऐसे दूरस्थ स्थानों पर चला जाता है जो हमारे उपयोग में नहीं आता तथा भूजल के स्तर को भी बढ़ाने में मदद नहीं करता इस बहने वाले जल को रोकना अति आवश्यक है वर्षा जल जहां गिरे वहीं संचित कर लिया जाना एक आदर्श स्थिति है सामूहिक रूप से जल के संरक्षण के उपायों को अपनाया जाना चाहिए क्योंकि हम सब स्वतंत्र रूप से भूजल का दोहन बिना कोई शुल्क अदा किये कर रहे हैं हमें अपने खेतों, तालाबों, जलाशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व इकट्ठा करने के अलावा बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे–छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा को करना चाहिए जो धीरे–धीरे रिस कर भूजल में पहुंच जाएगा मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने सलाह दी है कि खेतों की मेढ़ो को ऊंचा तथा ढालू खेतों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह–जगह रोक देना चाहिए यह सबसे सरल तथा प्रभावी उपाय है इससे मात्र जल का संरक्षण ही नहीं होता बल्कि मृदा क्षरण को भी रुकता है परिणाम स्वरूप फसलों की उपज बढ़ती है इसलिए जल का संरक्षण एकमात्र हमारी जलापूर्ति तथा फसल उत्पादन का उपाय है डॉ खलील खान ने बताया कि जल संकट को आने से रोकने के लिए घर–घर में छोटे जलाशय बनाकर छतों का पानी इकट्ठा करें खेतों की मेढ़ो को मजबूत और ऊंचा करें फसलों को मेढ़ों पर बोयें अधिक से अधिक दलहनी फसलें उगाएं वृहद स्तर पर वृक्षारोपण करें जलाशयों व तालाबों को गहरा किया जाना चाहिए तथा नालों को जगह–जगह बांध कर जल रोकें जिसे बाद में उपयोग किया जा सके कम पानी चाहने वाली फसलें उगाएं तथा जमीन से निकाले गए जल का सदुपयोग किया जाना अति आवश्यक है जिससे आने वाले समय में पानी के लिए भटकना न पड़े।

13 June 2021 satta express.pdf - Read-only

आर.एन.आई.नं.– UPHIN/2009/44666

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

सत्ता एक्सप्रेस

बी.ए.बी.पी नई दिल्ली एवं राज्य सरकार द्वारा विज्ञापन मान्यता प्राप्त

वर्ष: 12 अंक : 239 कानपुर देहात, रविवार 13 जून 2021 Email: sattaexpress@rediffmail.com

जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधनः डॉ वीके कनौजिया

दैनिक सत्ता एक्सप्रेस

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ वीके कनौजिया एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन विषय पर संयुक्त रूप में विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि जल ही जीवन है, जल जीवन का अमृत है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है। आज समय की मांग है कि हम सभी को वर्तमान व भावी पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण व उसके उचित प्रबंधन पर तेजी से काम करना होगा। जल संचयन के लिए समय रहते जाग जाएं क्योंकि ष्हिमन पानी राखिए,बिन पानी सब सून।पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।। डॉक्टर कनौजिया ने बताया कि भारत में 85: पानी कृषि कार्य, 10: उद्योगों और 5: घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि देश में पानी की मांग 2030 तक दोगुना होने की संभावना है। उन्होंने यह भी बताया कि आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घन मीटर थी जो वर्ष 2000 में 2300 घन मीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घन मीटर रह जाने का अनुमान है। उन्होंने कहा देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 प्रतिशत जल संचयन कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों,कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। डॉक्टर वीके कनौजिया ने कहा वर्षा जल के संचयन यह सबसे उपयुक्त समय है। इस मौसम में लगभग 75 दिन ही वर्षा होती है जिसमें लगभग 85 से 90: भाग बरस जाता है तथा वर्ष के शेष महीनों में छुटपुट वर्षा से काम चलाना पड़ता है । वर्षा के दौरान आवश्यकता से अधिक जल की उपलब्धता का संचयन हमारे उज्जवल भविष्य की आवश्यकता है। देखा जाये तो फसलों, वनस्पतियों तथा मत्स्य पालन को छोड़कर, वर्षा जल का सीधा उपयोग कम ही जगह पर होता है। परंतु तालाबों, नदियों, झरनों, बांधों, आदि में जल का का इकट्ठा होना हमारी जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा है। इन सबके बावजूद वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे घरों, खेतों, जंगलों, आदि से बहकर ऐसे दूरस्थ स्थानों पर चला जाता है जो हमारे उपयोग में नहीं आता तथा भूजल के स्तर को भी बढ़ाने में मदद नहीं करता। इस बहने वाले जल को रोकना अति आवश्यक है। वर्षा जल जहां गिरे वहीं संचित कर लिया जाना एक आदर्श स्थिति है। सामूहिक रूप से जल के संरक्षण के उपायों को अपनाया जाना चाहिए क्योंकि हम सब स्वतंत्र रूप से भूजल का दोहन बिना कोई शुल्क अदा किये कर रहे हैं। हमें अपने खेतों, तालाबों, जलाशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व इकट्ठा करने के अलावा बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे – छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा को करना चाहिए जो धीरे–धीरे रिस कर भूजल में पहुंच जाएगा। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने सलाह दी है कि खेतों की मेंड़ो को ऊंचा तथा ढालू खेतों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह–जगह रोक देना चाहिए। यह सबसे सरल तथा प्रभावी उपाय है। इससे मात्र जल का संरक्षण ही नहीं होता बल्कि मृदा क्षरण को भी रुकता है परिणाम स्वरूप फसलों की उपज बढ़ती है। इसलिए जल का संरक्षण एकमात्र हमारी जलापूर्ति तथा फसल उत्पादन का उपाय है। डॉ खलील खान ने बताया कि जल संकट को आने से रोकने के लिए घर– घर में छोटे जलाशाय बना कर छतों का पानी इकठ्ठा करें। खेतों की मेड़ों को मजबूत और ऊंचा करें। फसलों को मेड़ों पर बोयें।अधिक से अधिक दलहनी फसलें उगाएं। बृहद स्तर पर वृक्षारोपण करें। जलाशयों व तालाबों को गहरा किया जाना चाहिए तथा नालों को जगह – जगह बांध कर जल रोकें जिसे बाद में उपयोग लिया जा सके। कम पानी चाहने वाली फसलें उगाएं तथा जमीन से निकाले गए जल का सदुपयोग किया जाना अति आवश्यक है। जिससे आने वाले समय में पानी के लिए भटकना न पड़े।

सत्ता एक्सप्रेस३. .पाठकों की पाती

तुम्हारा चेहरा और कविता

चेहरे के
हाव भाव
मुद्राएँ ही
अक्सर कोई न कोई
नई शक्ल तैयार करते जाते
ये चेहरे कभी हंसी
तो कभी हास्य से भरपूर
तो कभी संजीदा भाव बतलाते
चेहरे बामुश्किल पहचाने जाते
जब चेहरे के भाव बदलते जाते
पर गौरतलब है
तो ये कि यहाँ
हजारों चेहरों के भाव
समेट सकता है
और होता जाता है
घोषित कविता
ये भरा पूरा चेहरा तुम्हारा।

विमल चन्द्राकर
जनवादी लेखक
कानपुर देहात।

जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन:- डॉ वीके कनौजिया

13/06/2021

ओम जी पाठक/ ब्यूरो प्रमुख डे टुडे इंडिया
कानपुर देहात

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम मेंअनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ वीके कनौजिया एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन विषय पर संयुक्त रूप में विस्तार से जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि जल ही जीवन है, जल जीवन का अमृत है। इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है। आज समय की मांग है कि हम सभी को वर्तमान व भावी पीढ़ियों के लिए जल संरक्षण व उसके उचित प्रबंधन पर तेजी से काम करना होगा। जल संचयन के लिए समय रहते जाग जाएं क्योंकि ष्बिन पानी सब सून।पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चूनष्।। डॉक्टर कनौजिया ने बताया कि भारत में 85: पानी कृषि कार्य, 10: उद्योगों और 5: घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जाता है। उन्होंने बताया कि देश में पानी की मांग 2030 तक दोगुना होने की संभावना है। उन्होंने यह भी बताया कि आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घन मीटर थी जो वर्ष 2000 में 2300 घन मीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घन मीटर रह जाने का अनुमान है। उन्होंने कहा देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 प्रतिशत जल संचयन कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों,कृषि व उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। डॉक्टर वीके कनौजिया ने कहा वर्षा जल के संचयन यह सबसे उपयुक्त समय है। इस मौसम में लगभग 75 दिन ही वर्षा होती है जिसमें लगभग 85 से 90: भाग बरस जाता है तथा वर्ष के शेष महीनों में छुटपुट वर्षा से काम चलाना पड़ता है । वर्षा के दौरान आवश्यकता से अधिक जल की उपलब्धता का संचयन हमारे उज्जवल भविष्य की आवश्यकता है। देखा जाये तो फसलों, वनस्पतियों तथा मत्स्य पालन को छोड़कर, वर्षा जल का सीध ा उपयोग कम ही जगह पर होता है। परंतु तालाबों, नदियों, झरनों, बांधों, आदि में जल का का इकट्ठा होना हमारी जरूरतों का एक बड़ा हिस्सा है। इन सबके बावजूद वर्षा जल का बहुत बड़ा हिस्सा हमारे घरों, खेतों, जंगलों, आदि से बहकर ऐसे दूरस्थ स्थानों पर चला जाता है जो हमारे उपयोग में नहीं आता तथा भूजल के स्तर को भी बढ़ाने में मदद नहीं करता। इस बहने वाले जल को रोकना अति आवश्यक है। वर्षा जल जहां गिरे वही संचित कर लिया जाना एक आदर्श स्थिति है। सामूहिक रूप से जल के संरक्षण के उपायों को अपनाया जाना चाहिए क्योंकि हम सब स्वतंत्र रूप से भूजल का दोहन बिना कोई शुल्क अदा किये कर रहे है। हमें अपने खेतों, तालाबों, जलाशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व इकट्ठा करने के अलावा बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे – छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा को करना चाहिए जो ध ीरे–धीरे रिस कर भूजल में पहुंच जाएगा। मृदा वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने सलाह दी है कि खेतों की मेंड़ो को ऊंचा तथा ढालू खेतों को छोटे–छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह–जगह रोक देना चाहिए। यह सबसे सरल तथा प्रभावी उपाय है। इससे मात्र जल का संरक्षण ही नहीं होता बल्कि मृदा क्षरण को भी रुकता है परिणाम स्वरूप फसलों की उपज बढ़ती है। इसलिए जल का संरक्षण एकमात्र हमारी जलापूर्ति तथा फसल उत्पादन का उपाय है। डॉ खलील खान ने बताया कि जल संकट को आने से रोकने के लिए घर– घर में छोटे जलाशय बना कर छतों का पानी इकठ्ठा करें। खेतों की मेड़ों को मजबूत और ऊंचा करें। फसलों को मेड़ों पर बोयें।अधिक से अधिक दलहनी फसलें उगाएं। बृहद स्तर पर वृक्षारोपण करें। जलाशयों व तालाबों को गहरा किया जाना चाहिए तथा नालों को जगह – जगह बांध कर जल रोकें जिसे बाद में उपयोग लिया जा सके। कम पानी चाहने वाली फसलें उगाएं तथा जमीन से निकाले गए जल का सदुपयोग किया जाना अति आवश्यक है। जिससे आने वाले समय में पानी के लिए भटकना न पड़े।

मुकुल पाण्डेय को क्षेत्रीय अध्यक्ष बनने पर हुई खुशी-

संवाद सूत्र डे टुडे इंडिया

13 june_jan express.pdf - Read-only

जन एक्सप्रेस

/janexpresslive

लखनऊ, रविवार, 13 जून, 2021, वर्ष : 12, अंक : 239, पृष्ठ : 12, मूल्य ₹3.00/-

www.janexpresslive.com/epaper

बहुत ही जरूरी है वर्षा जल संचयन : डॉ. खलील खान

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून। पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून जल ही जीवन है जल जीवन का अमृत है इसके बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है। सीएसएयू के कुलपति डॉ. डी.आर. सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में शनिवार को अनौगी स्थित कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी. के. कनौजिया एवं मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने जरूरी है वर्षा जल संचयन एवं उसका उचित प्रबंधन विषय पर जानकारी दी।

डॉ. कनौजिया ने कहा कि देश में होने वाली कुल वर्षा का 5 प्रतिशत जल संचयन कर लिया जाए तो देश के करोड़ों लोगों,कृषि एवं उद्योगों की वर्ष भर की पानी की आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है। वर्षा के जल के संचयन यह सबसे उपयुक्त समय है इस मौसम में लगभग 75 दिन वर्षा होती है। उन्होंने कहा कि वर्षा जल जहां गिरे वहीं संचित कर लिया जाना एक आदर्श स्थिति है। सामूहिक रूप से जल के संरक्षण के उपायों को अपनाया जाना चाहिए हमें अपने खेतों, तालाबों, जलाशयों, नालों, बेकार पड़ी भूमियों आदि में जल रोकने व इकट्ठा करने के अलावा बड़े घरों और प्रतिष्ठानों में छोटे - छोटे जलाशय बनाकर वर्षा जल को इकट्ठा करना चाहिए जो धीरे-धीरे रिस कर भूजल में पहुंच जाएगा। मृदा वैज्ञानिक डॉ.खलील खान ने बताया कि खेतों की मेंड़ो को ऊंचा तथा ढालू खेतों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर जल को जगह-जगह रोक देने से जल के संरक्षण के साथ ही मृदा क्षरण भी रुकता है जिससे फसलों की उपज बढ़ती है। उन्होंने बताया कि बृहद स्तर पर वृक्षारोपण करने के साथ ही जलाशयों व तालाबों को गहरा कर तथा नालों को जगह - जगह बांध कर जल रोकें जिसे बाद में उपयोग लिया जा सके। भारत में कृषि कार्य पर 85 फीसदी, उद्योगों में 10 फीसदी तथा घरेलू कार्यों में 5 फीसदी पानी का इस्तेमाल किया जाता है।

वहीं 2030 तक देश में पानी की मांग दोगुना होने की संभावना है। आंकड़ों के अनुसार देश में वर्ष 1994 में पानी की उपलब्धता प्रति व्यक्ति 6000 घन मीटर थी जो वर्ष 2000 में 2300 घन मीटर रह गई तथा वर्ष 2025 में इसके घटकर 1600 घन मीटर रह जाने का अनुमान है।